रात्रिक्लास 18/6/68 ओमशान्ति शिवबाबा याद है?

बाप कहते हैं मनमनाभव। अपन को आत्मा समझ कर यहाँ बैठना है। फिर भी भूल जाते हैं; इसलिए आगे भी रोज़2 बाप ने समझाया है अपन को आत्मा समझो। शिवभगवानुवाचः। परमात्मा है भी ज्ञान का सागर। बाप भी कहेंगे मैं मनुष्य सृष्टि का बीज रूप हूँ। हमको इस रचना के आदि–मध्य–अन्त का नॉलेज है; क्योंकि मैं मनुष्य सृष्टि का बीज रूप हूँ। कोई मनुष्य नहीं समझते हैं। तुम्हारा गुरु है। शिवबाबा का तो गुरु नहीं है। परंपरा गुरु करने का रिवाज़ चला आता है; परन्तु यह भक्ति मार्ग में कहते हैं। सतयुग, त्रेता में तो होता ही नहीं है रसम–रिवाज़। अभी तुम भी कहते हो हमने भी गुरु किया है। वह मनुष्य को गुरु करने का रिवाज है। अभी तुमको मिला है सद्गुरु। वह अनेक गुरु। यह एक सद्गुरु। इनका भी गायन है भक्ति मार्ग में। सिक्ख लोग भी मानते हैं सद्गुरु अकाल मूर्त। यह महिमा कृष्ण की कब नहीं करेंगे। एक भगवान की महिमा अलग है। उनसे वरसा लेते हैं ब्राह्मण। देवता बनने का वरसा लेते हैं। मनुष्य से देवता बाप ही बनाते हैं। नहीं तो देवता पद कहाँ से आया। भगवान पढ़ाते हैं बच्चों को जिससे इतना पद मिलता है। बाबा पढ़ाते हैं। आपे ही सिद्ध करते हैं शिवबाबा पढ़ाते हैं। शिवबाबा पतित–पावन सद्गतिदाता भी है। एक्युरेट अक्षर निकलते हैं ना। सद्गति माना ही स्वर्ग की बादशाही। सतयुग की गद्दी। यहाँ तो कोई ग(द्)दी नहीं है। गद्दी राजाओं को मिलती है। यहाँ तो ग(द्)दी है नहीं। वह कोई बाप से वरसा नहीं पावेंगे। उन्होंने ग(द्)दी पाई कर्मों की हिसाब से। वह यहाँ ग(द्)दी तो पा न सके। मुश्किल है। राजाओं की बुद्धि ण(ध)न–दौलत महल ही रहते हैं। कश्मीर का राजा मरा वह आर्यसमाजियों अपना धन देकर गया। उसक(ा) रिटर्न तो आर्यसमाजी नहीं दे सकते। भगवान तो रिटर्न देते आये हैं भक्तिमार्ग में। वह है हद के। अभी बाप रिटर्न देते हैं बेहद के। उनको वरसा ही कहा जाता है। बच्चे समझते हैं भगवान पढ़ाते हैं। शिवबाबा पढ़ाते हैं तो याद किया ना। मनमनाभव हो गया। हम स्टूडेन्ट्स हैं। एमऑबजेक्ट है हम नर से नारायण बनने आये हैं। टीचर को याद करो तो भी बात वही रहती है। बच्चे समझते हैं बाप ने पक्का कराया है हम आत्मा अविनाशी हैं। हमारा बाप परमात्मा है। भक्ति मार्ग में भी उनको पुकारते रहते हैं। शिवबाबा2 कितना करते हैं। शिवकाशी फिर कहते विश्वनाथ गंगा। काशी वाला शिव विश्वनाथ वह तो ठीक है। गंगा फिर पिछाड़ी में अक्षर लगा दिया है। यह भी तुम जानते हो शिवबाबा और यह नदियाँ पारस नाथ बनाती हैं। वह सभी भक्ति मार्ग की उल्टी बातें हैं। तुम अभी शिवबाबा के कंठे पर बैठे हो। ज्ञान गंगाएँ भी हो। कहाँ भी बैठो यह पक्का कर लो। शिवबाबा याद है और सृष्टिचक्र याद है? तुम लिख भी सकते हो 84 का चक्र याद है? शिवबाबा याद है यह जहाँ–तहाँ लिखा हुआ हो तो याद रहेगा। दिन–प्रतिदिन एडीशन होती जाती है। जबकि हम बाप के बच्चें हैं तो बाप स्वर्ग का रचयिता है तो हमें भी स्वर्ग के मालिक होने चाहिए। हमें जरूर स्वर्ग के मालिक बनने चाहिए। सभी एक बाप के बच्चे हैं। तो क्यों नहीं हम भी मालिक बनें। सो तो पढ़ाई से बनेंगे ना। बाप भारतवासियों को ही पढ़ाते हैं। बाप ने कोई समय में वरसा दिया है इसलिए हर वर्ष शिव–जयन्ती ब(म)नाते हैं। किसलिए मनाते हैं वह समझ नहीं सकते हैं। शिवबाबा ने आकर स्वर्ग का मालिक बनाया। तुम जानते हो शिवबाबा आकर पढ़ाते हैं। तो उनसे पहले वरसा श्रीकृष्ण को मिलता है आदि2। प्रिन्स–प्रिन्सेज राजा–रानी बनते हैं और प्रजा भी बनती है। हम राजा बनते हैं तो प्रजा साहूकार गरीब आदि भी बनेंगे। यह बातें बाप बच्चों को समझाते हैं; इसलिए कि याद कर और फिर औरों को रास्ता बताओ। आबू में प्रदर्शनी पहले भी रची थी जो फिर रचे हैं औरों को रास्ता बताने। पवित्र भी बनना है। पवित्र सतोप्रधान बन जावेंगे तो फिर 21 जन्म तुमको राजाई मिलेगी। टेम्पटेशन है ना। झट प्रतिज्ञा कर लेंगे। फिर माया घुटका खिलाती है। माया बड़ी जबरदस्त है। बच्चे भी समझ जाते हैं। बाप कहते हैं मीठे2 बच्चे। क्यों नहीं मीठे2 कहेंगे। अभी पुरुषोत्तम संगमयुग पर ही तुम मनुष्य से देवता बन सकते हो। सतयुग को पुरुषोत्तम युग नहीं कहेंगे। कल्याणकारी पुरुषोत्तमयुग है ही संगमयुग। अच्छा, बच्चों को गुडनाइट और नमस्ते।